

यीशु मसी क्रूस दी टाँगौ



bangani

ਯੀਸ਼ੁ ਮਸੀ ਕ੍ਰੂਸ ਦੀ ਟਾਂਗੀ

bangani
uttarkashi, uttrakhand, india



For permission to reuse, contact the copyright holder.

Bangani Language Book
Red level book

परकाशण:-

NLCI

बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

हम बंगाणी क्षेत्र में साक्षरता कार्यक्रम चला रहे हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ना लिखना सीख सकें। उसी आधार पर इस किताब को भी तैयार किया गया है। यह एक कहानी की किताब है। जिसमें यीशु मसीह को किस प्रकार क्रूस पर चढ़ाया, उसके बारे में बहुत ही सरल रीति से बताया गया है। इस कहानी को हमने अपनी मातृभाषा में ही तैयार किया है जिससे वह इस कहानी को आसानी से समझ सकें। और अपनी मातृभाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास भी कर सकें।



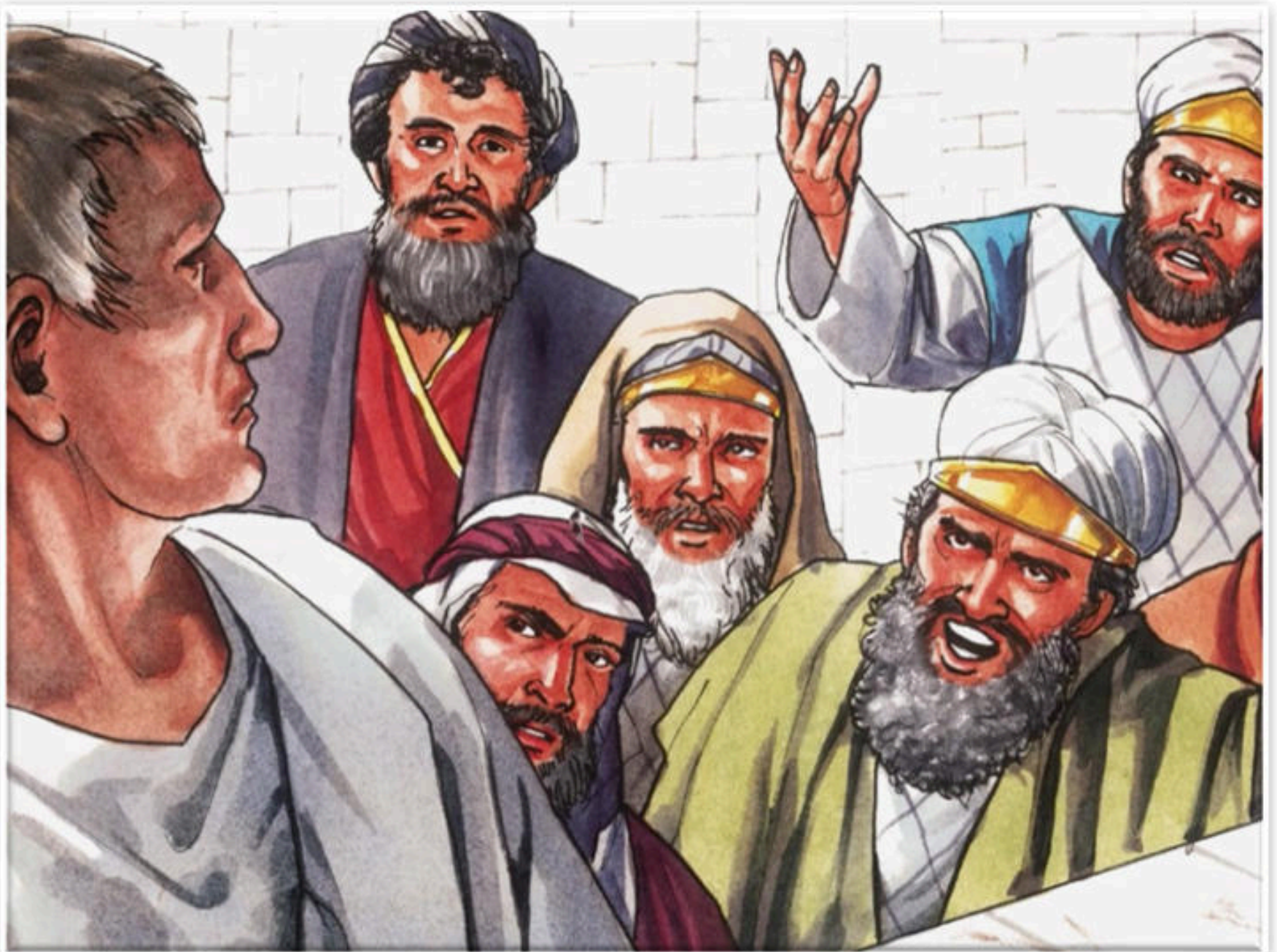
यीशु परमेश्वर रै बारे दि बौरि बुशै शिका
थौ। यीशुइ लोग ठीक कियै, औज़ि
काफी लोग यीशु री बुशै शुणै थै। एज़ी
बौज़ै कौइ याजक औज़ि नियम कानुण
शिकाणै वाळै यीशु कौइ बौरि चीड़ै थै।



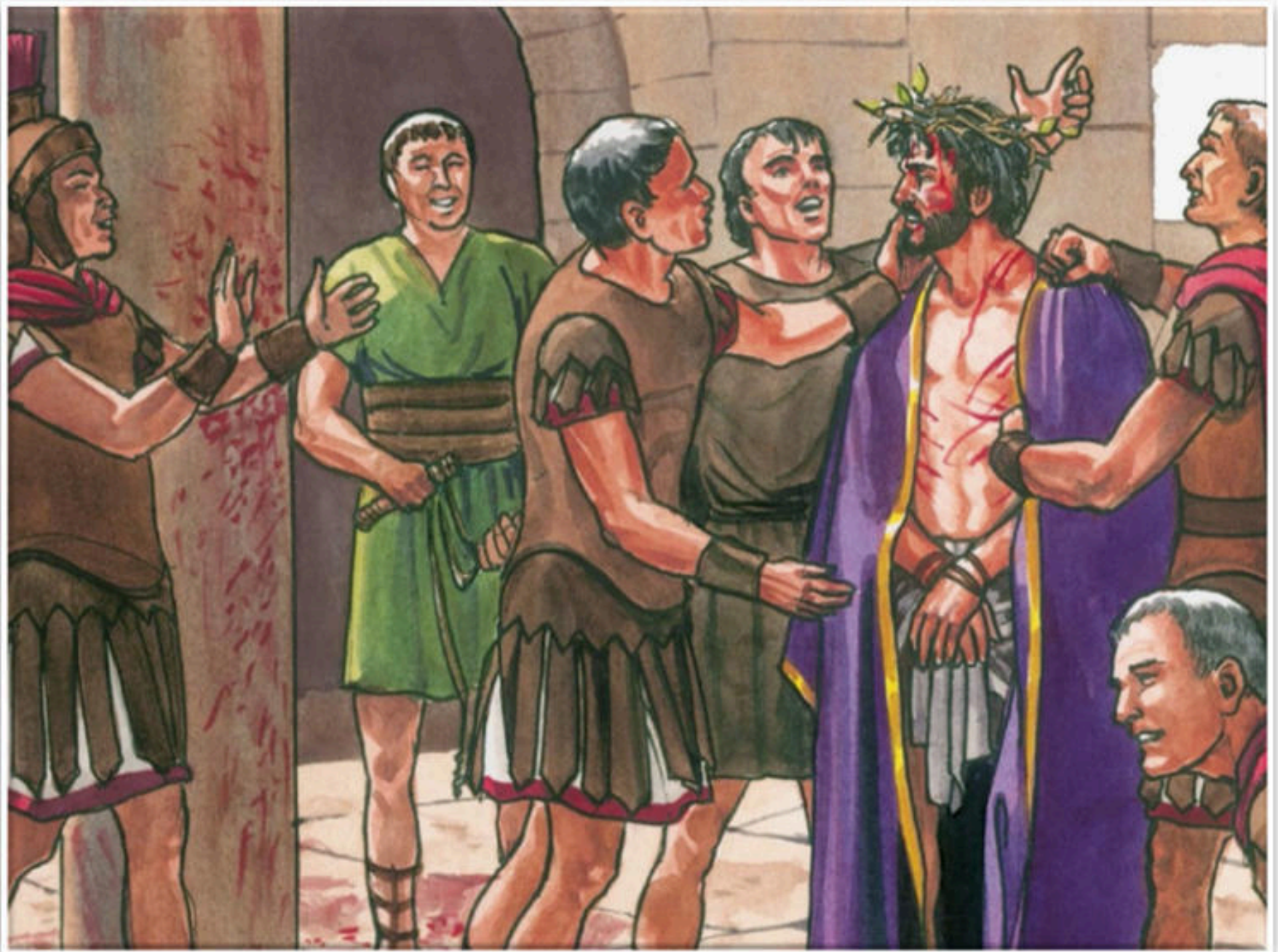
याजक औजि नियम कानुण शिकाणै
वाळै यीशु दि बौरि दोश लाण थै। यीशु रै
बारा चेलै माइं कौइ यऊदा नौऊं रौ एक
चेलौ थौ। तिणी थोड़ै पौइशाऊं री लालच
दि आशियौ यीशु पौकड़ाओ



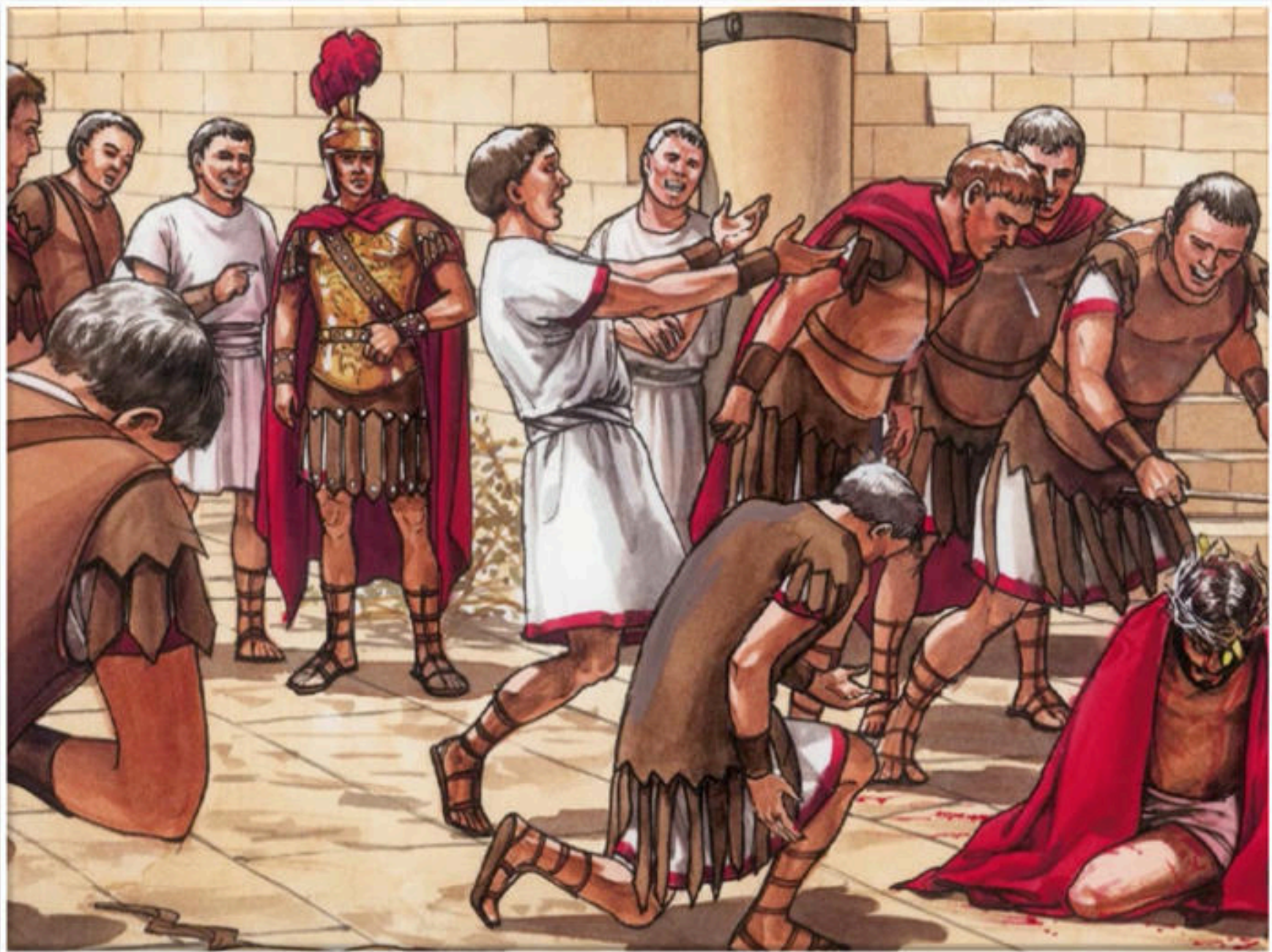
सिपाइउं यीशु पिलातुस काइ गिणौ ।
तेत्कै लोगु यीशु दि बौरि जुठै बानै ला ।
पिलातुसेइ याजक औज़ि नियम कानुण
शिकाणै वाळौउं आरि बोलौ, कि मुँइ
एसदि कोइ दोश ना पाओ ।



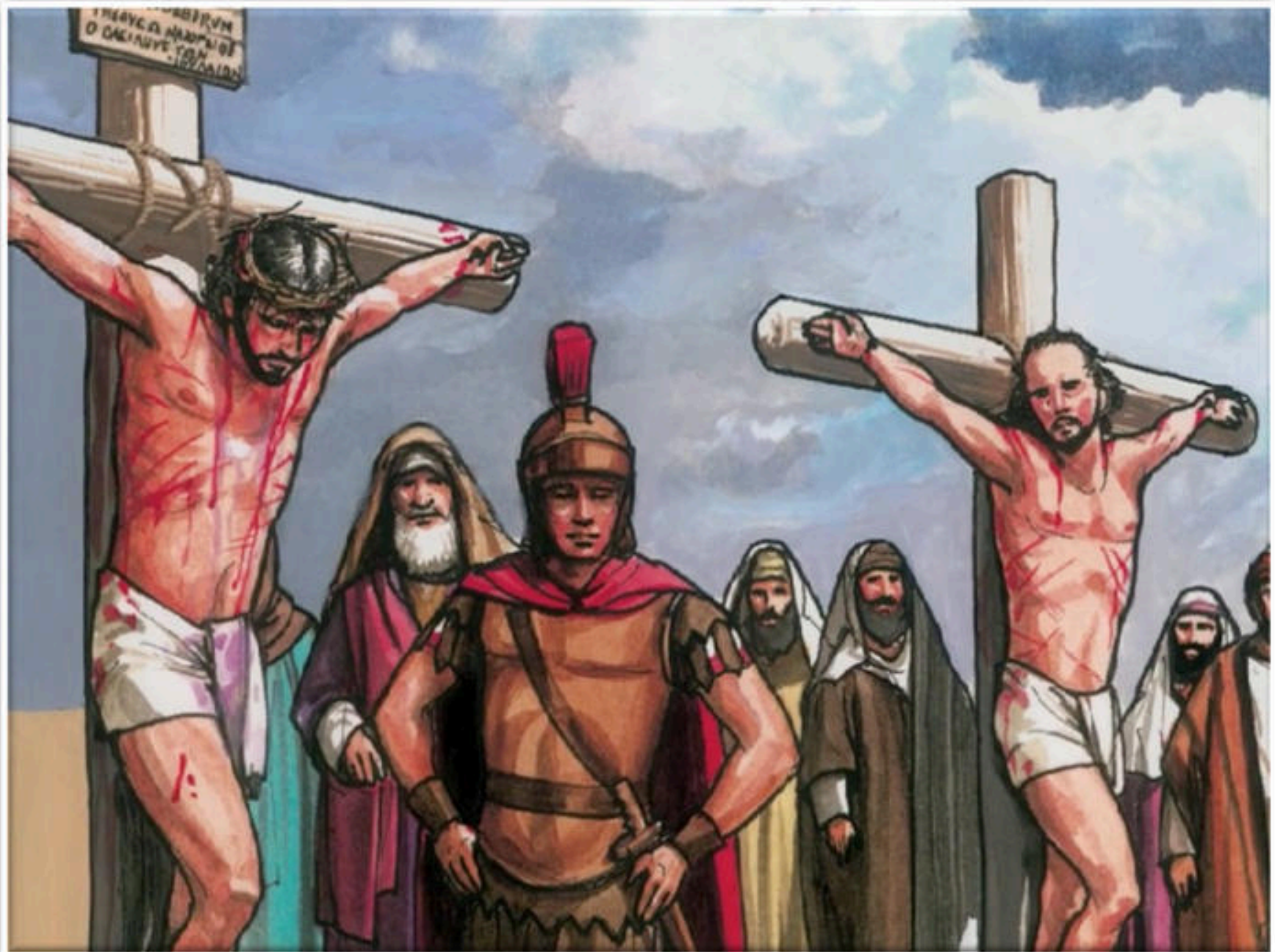
पिलातुस यीशु दि कोड़े लाइयौ पोरु
छोड़नै चाँए थौ। पर लोगु लौलियाइयौ
बोलौ की एस क्रूस पारै टाँगौ। तैबै
पिलातुसेइ यीशु लोगु रि इच्छा दि छोड़ी
दैऔ।



तैबै सिपाइउं यीशु दि कोड़े लायै औज़ि
बैज़नी जुड़कै बिड़ाए। तैबै यीशु रै मुन्डेदि
कान्डै रौ मुकुट लाओ। तैबै यीशु बौरि
पिटौ औज़ि मुँए दि थूकियौ यीशु रौ
मौज़ाक उड़ाओ।



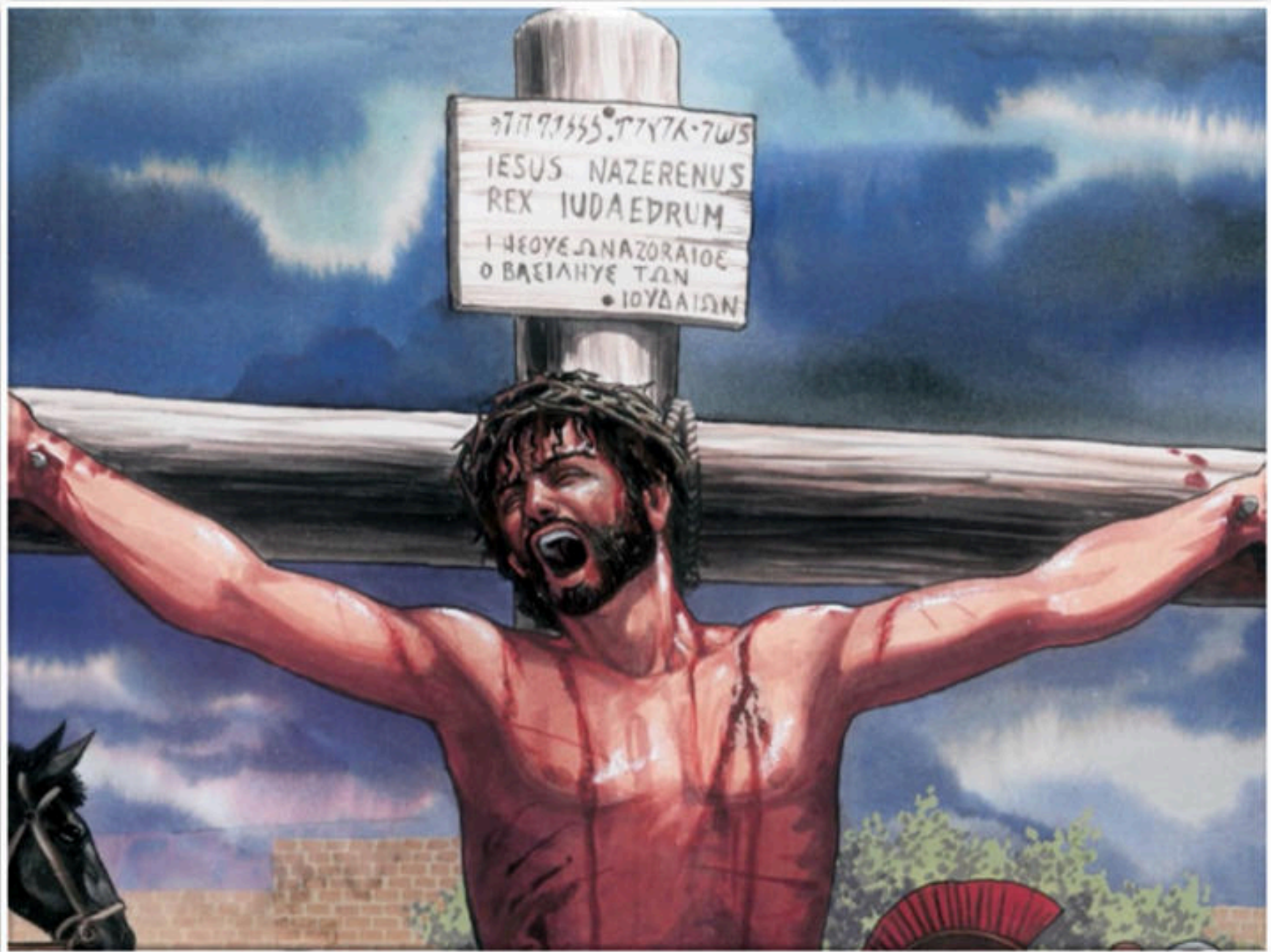
तेतबासियै सिपाइउं यीशु गूलगुता डान्दै
माइं गिणौ। तेत्कै सिपाइउं यीशु क्रूस दि
टांगौ औजि तेसरै जुड़कौउं खि चिट्टी
पाइ। औजि तेतबासियै यीशु रै जुड़कै
चिट्टी रै इसाब दि आपस माइं बाँटै।



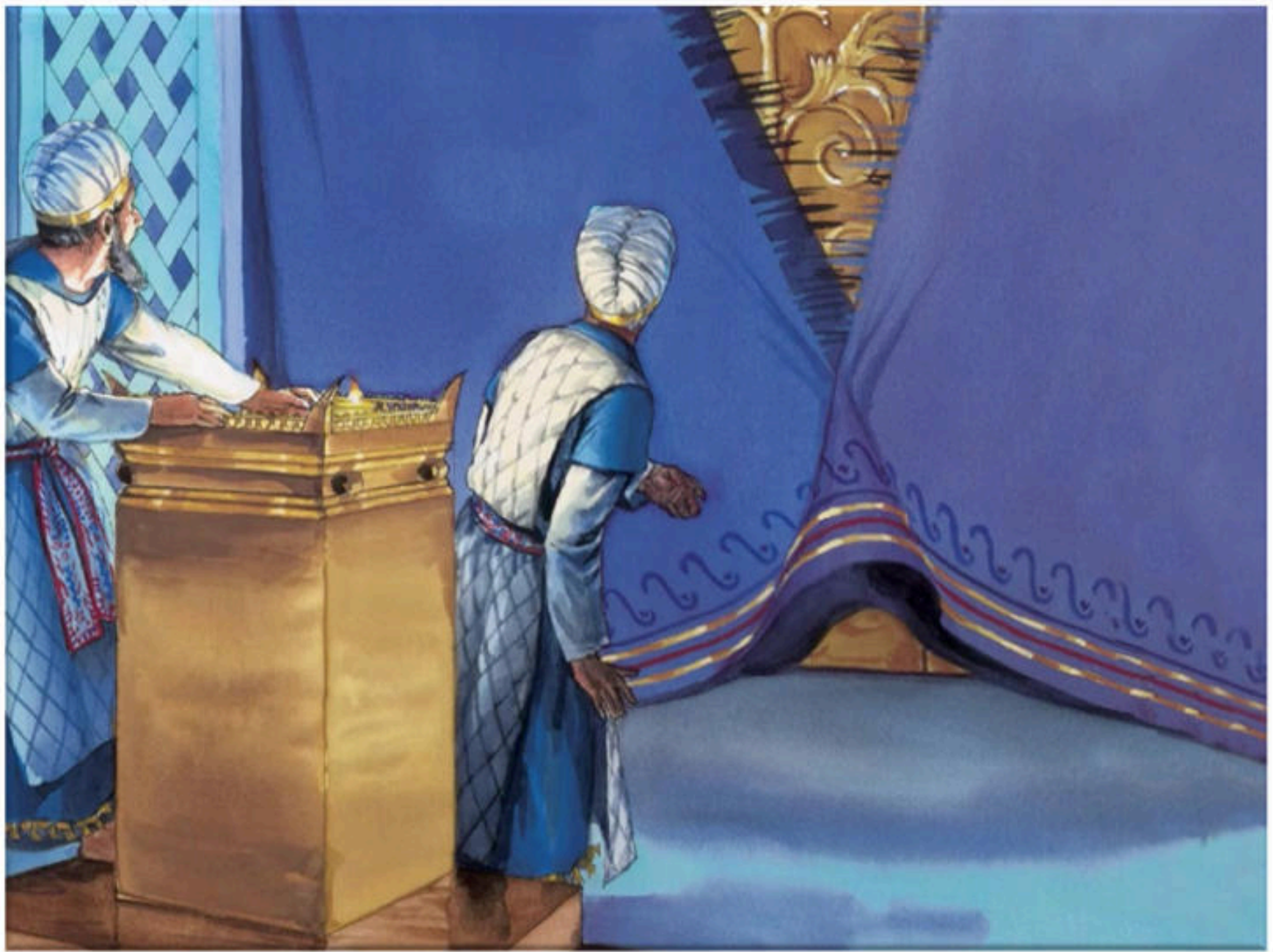
तैबै सिपाइउं यीशु आरि बोलौ, जौ तू
मसी तै तू आफु बौच। पर जेती तेत्कै
लोग थै, सै सारै जौणै तेसरौ मौज़ाक रौयै
थै उड़ान्दै लागी।



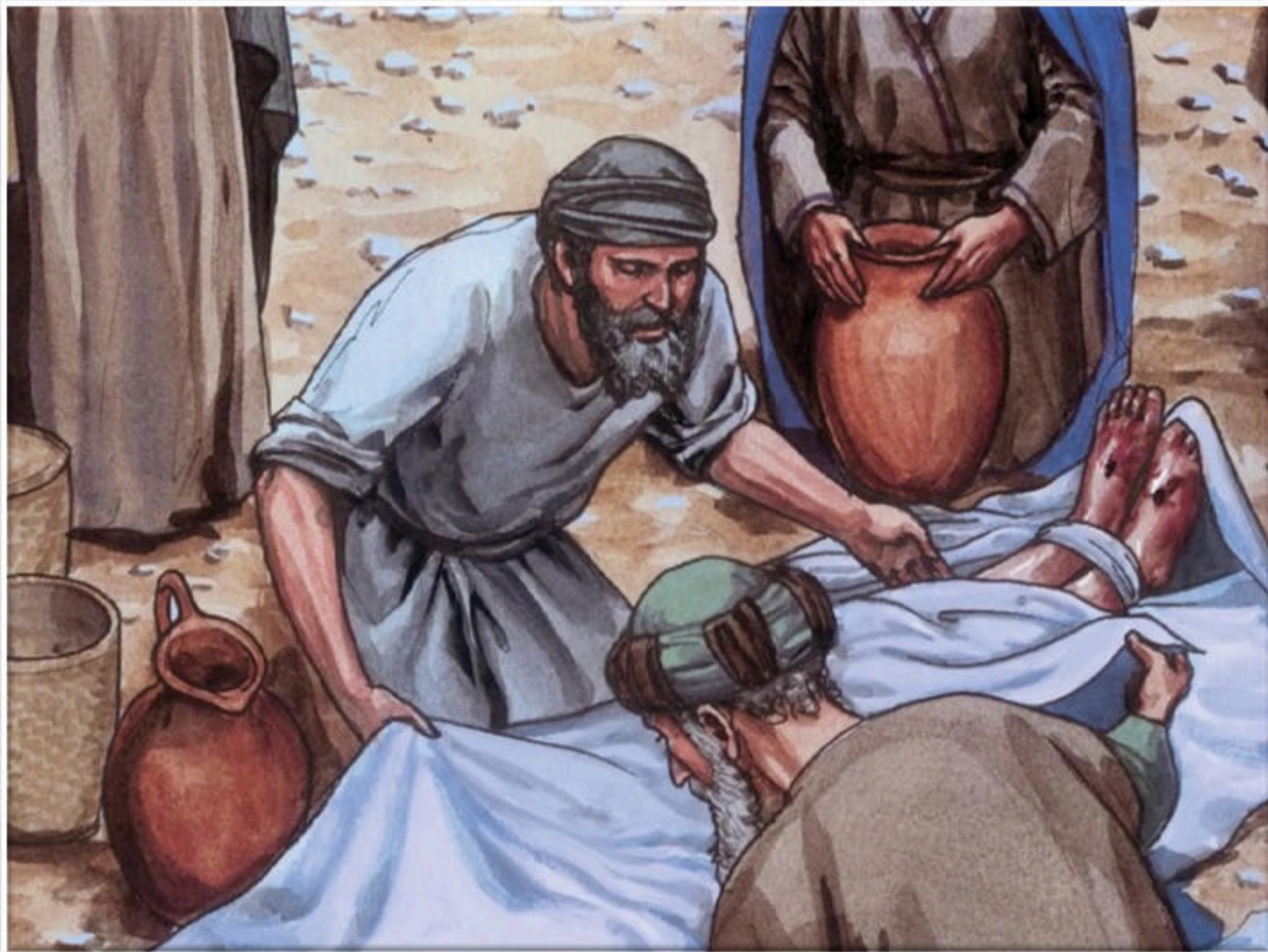
तैबै तिउं क्रूस दि दोशपत्र लाओ, ज़िन्दै
लिखौन्दौ थौ, “एऊ यऊदिउं रौ राज़ा” ।
सेजै बौक्तेदि दुजै पौरै कौइ चीजै पौरै
ज़ौउं पुरै देश दि इनारौ पौड़ौ ।



चीजै पौरै रै बौक्तेदि यीशुइ ज़ोरै कौइ
बोलौ, “ए पिता! ताईं आउं केलाइ
छोड़ौ।” एशौ बोलियौ थोड़ै बौक्ते बासियै
यीशुइ दुजाळियै बोलौ। ए पिता! आउं
आपड़ी आत्माइ तेरै आथे दि देऊ एशौ
बोलियौ तिणी आपड़ौ पौराण छोड़ै।



औज़ि परमेश्वर रौ भवन रौ पौरदौ माथै
कौइ तौळ ज़ौउं च़िरुवौ । दौरति इली
औज़ि एक बौड़ौ बुंइच्चेळ उवौ । जौ
सिपाइउं सेउ देखौ तैबै तिउं बोलौ, एऊ
तै छौइखि परमेश्वर रौ बेटा थौ ।



जौ बियाळकै उवौ तैबै युसूफ नौऊं रौ
एक माणूछ थौ, जूणजौ यीशु रौ चेलौ थौ।
तिणी पिलातुस काइ डेइयौ यीशु रि लाश
माँगी। यीशु रि लाश चादर दि लौपेटियौ
नौइ कबर दि थौइ।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI संस्थान के द्वारा तैयार की गई है।

हम मातृभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मातृभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मातृभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मातृभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मातृभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे कि बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मातृभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....धन्यवाद.....



This book was created with some Bloom Enterprise features enabled at no cost in order to support projects solely funded by the local community.